

# शनि चालीसा PDF

॥ दोहा ॥

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल । दीनन के दुख दूर करि, कीजै  
नाथ निहाल ॥

जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज । करहु कृपा हे रवि तनय,  
राखहु जन की लाज ॥

॥ चौपाई ॥

जयति जयति शनिदेव दयाला । करत सदा भक्तन प्रतिपाला ॥  
चारि भुजा तनु श्याम विराजै । माथे रतन मुकुट छबि छाजै ॥  
परम विशाल मनोहर भाला । टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला ॥  
कुण्डल श्रवण चमाचम चमके । हिय माल मुक्तन मणि दमकै ॥  
कर में गदा त्रिशूल कुठारा । पल बिच करैं अरिहिं संहारा ॥

पिंगल, कृष्णों, छाया, नन्दन । यम, कोणस्थ, रौद्र, दुख भंजन ॥  
सौरी, मन्द, शनी, दश नामा । भानु पुत्र पूजहिं सब कामा ॥  
जा पर प्रभु प्रसन्न हवैं जाहीं । रंकहुँ राव करैं क्षण माहीं ॥  
पर्वतहू तृण होई निहारत । तृणहू को पर्वत करि डारत ॥

राज मिलत बन रामहिं दीन्हयो । कैकेइहुँ की मति हरि लीन्हयो ॥  
बनहूँ में मृग कपट दिखाई । मातु जानकी गई चुराई ॥

लखनहिं शक्ति विकल करिडारा । मचिगा दल में हाहाकारा ॥

रावण की गति मति बौराई । रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई ॥

दियो कीट करि कंचन लंका । बजि बजरंग बीर की डंका ॥

नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा । चित्र मयूर निगलि गै हारा ॥

हार नौलखा लाग्यो चोरी । हाथ पैर डरवायो तोरी ॥

भारी दशा निकृष्ट दिखायो । तेलिहिं घर कोल्हू चलवायो ॥

विनय राग दीपक महं कीन्हयों । तब प्रसन्न प्रभु हवै सुख दीन्हयों ॥

हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी । आपहुं भरे डोम घर पानी ॥

तैसे नल पर दशा सिरानी । भूंजी-मीन कूद गई पानी ॥

श्री शंकरहिं गहयो जब जाई । पार्वती को सती कराई ॥

तनिक विलोकत ही करि रीसा । नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा ॥

पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी । बची द्रौपदी होति उधारी ॥

कौरव के भी गति मति मारयो । युद्ध महाभारत करि डारयो ॥

रवि कहँ मुख महँ धरि तत्काला । लेकर कूदि परयो पाताला ॥

शेष देवलखि विनती लाई । रवि को मुख ते दियो छुड़ाई ॥

वाहन प्रभु के सात सजाना । जग दिग्गज गर्दभ मृग स्वाना ॥

जम्बुक सिंह आदि नख धारी । सो फल ज्योतिष कहत पुकारी ॥

गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं । हय ते सुख सम्पति उपजावैं ॥

गर्दभ हानि करै बहु काजा । सिंह सिद्धकर राज समाजा ॥

जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै । मृग दे कष्ट प्राण संहारै ॥

जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी । चोरी आदि होय डर भारी ॥

तैसहि चारि चरण यह नामा । स्वर्ण लौह चाँदी अरु तामा ॥  
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं । धन जन सम्पति नष्ट करावैं ॥  
समता ताम्र रजत शुभकारी । स्वर्ण सर्वसुख मंगल भारी ॥

जो यह शनि चरित्र नित गावै । कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै ॥  
अद्भुत नाथ दिखावैं लीला । करैं शत्रु के नशि बलि ढीला ॥  
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई । विधिवत शनि ग्रह शांति कराई ॥  
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत । दीप दान दै बहु सुख पावत ॥  
कहत राम सुन्दर प्रभु दासा । शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा ॥

॥ दोहा ॥

पाठ शनिश्चर देव को, की हों विमल तैयार । करत पाठ चालीस दिन, हो  
भवसागर पार ॥

pdfin

[pdfinbox.com](http://pdfinbox.com)